# इकाई 20 अनुवाद मूल्यांकन और अनुवाद समीक्षा

## इकाई की रूपरेखा


20.0 उद्देश्य

20.1 प्रस्तावना

20.2 अनुवाद मूल्यांकन क्या है?

20.3 अनुवाद मूल्यांकन की पद्धतियाँ

- 20.3.1 पुनरनुवाद / पुनः अनुवाद आधारित मूल्यांकन
- 20.3.2 अनुक्रिया आधारित मूल्यांकन

20.4 अनुवाद मूल्यांकन के आधार

- 20.4.1 सघन परीक्षण
- 20.4.2 वाचन परीक्षण
- 20.4.3 बोधन परीक्षण
- 20.4.4 तुलनात्मक परीक्षण
- 20.4.5 मूल पाठ पर आधारित मूल्यांकन

20.5 अनुवाद मूल्यांकन के मुख्य आयाम

20.6 अनुवाद–समीक्षा : स्वरूप और प्रकार

20.7 अनुवाद–समीक्षा : साहित्यिक पाठ का संदर्भ

- 20.7.1 वर्णनात्मक अनुवाद समीक्षा
- 20.7.2 तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा

20.8 अनुवाद–समीक्षा : साहित्येतर विषयों का संदर्भ

20.9 अनुवाद के पुनरीक्षण, मूल्यांकन और समीक्षा में अंतर

20.10 सारांश

20.11 अभ्यास के लिए प्रश्न

20.12 उपयोगी पुस्तकें


## 20.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- बता सकेंगे कि अनुवाद मूल्यांकन क्या होता है तथा इसकी क्या उपयोगिता है;
- अनुवाद–मूल्यांकन की विभिन्न पद्धतियों का उल्लेख कर सकेंगे;
- अनुवाद–समीक्षा से तात्पर्य बता सकेंगे;
- अनुवाद के पुनरीक्षण, मूल्यांकन और समीक्षा में अंतर कर सकेंगे; और
- अनुवाद मूल्यांकन और समीक्षा की प्रक्रिया को अपना सकेंगे।

## 20.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आप अनुवाद के पुनरीक्षण के विषय में पढ़ चुके हैं। आप जान गए हैं कि अनुवाद पूरा हो जाने के बाद उसका पुनरीक्षण किया जाता है। आप यह भी समझ गए हैं कि पुनरीक्षण किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाता है जो अनुवाद में पर्याप्त दक्ष एवं पारंगत हो। प्रस्तुत इकाई में हम आपका परिचय अनुवाद की जाँच के अन्य पहलुओं से कराएँगे। इस इकाई में आप अनुवाद के मूल्यांकन और अनुवाद समीक्षा के बारे में पढ़ेंगे। इसमें आपको पता चलेगा कि अनुवाद मूल्यांकन और अनुवाद समीक्षा से क्या तात्पर्य है, दोनों की प्रक्रिया क्या है। आपको यह भी पता चलेगा कि इन दोनों का महत्व और उपयोगिता क्या है। इसके अतिरिक्त, आपको अनुवाद पुनरीक्षण, मूल्यांकन और समीक्षा के बीच अंतर भी इस इकाई में पढ़ने को मिलेगा।

## 20.2 अनुवाद मूल्यांकन क्या है?

पुनरीक्षण और मूल्यांकन दोनों ही अनुवाद के बाद की प्रक्रियाएँ है और दोनों में ही अनुवाद की जाँच की जाती है। पुनरीक्षण में जहाँ जाँच के साथ सुधार, संशोधन और संपादन शामिल होता है, वहाँ मूल्यांकन में केवल जाँच की जाती है। जाँचने के पश्चात अनुवाद के स्वरूप और गुणवत्ता, उसकी उपलब्धियों और अनुपलब्धियों पर टिप्पणी दी जाती है।

अनुवाद मूल्यांकन के लिए अंग्रेजी में दो शब्द प्रचलित हैं – Translation Quality Assessment और Translation Evaluation । वास्तव में दोनों का संबंध अनुवाद की गुणवत्ता की जाँच से है। मूल्यांकन द्वारा यह निर्णय दिया जाता है कि अनूदित पाठ मूल पाठ के स्तर का है अथवा नहीं, उसके सहपाठ के रूप में प्रयुक्त हो सकता है अथवा नहीं। साथ ही, यह भी पता लगाया जाता है कि मूल पाठ से अलग रखे जाने पर (अथवा उन लोगों द्वारा पढ़े जाने पर जो स्रोत भाषा नहीं जानते) अनूदित पाठ उस संपूर्ण संदेश और उसमें निहित आशय का वहन करता है अथवा नहीं जो मूल पाठ में निहित है। ऊपर अंग्रेजी में दिए गए Assessment तथा Evaluation के लिए यद्यपि हिंदी में एक ही पर्याय 'मूल्यांकन' प्रयुक्त होता है तथापि दोनों में पर्याप्त अंतर है।

**Assessment तथा Evaluation में अंतर :** Quality Assessment मुख्यतया सूचनापरक पाठ (Text) का होता है। सार्वजनिक सूचना के लिए सार्वजनिक स्थलों पर लगे बोर्डों पर दी गई सूचना, रेलवे प्लेटफॉर्मों, बस अड्डों, हवाई अड्डों आदि पर यात्रियोपयोगी सूचनाएँ और यातायात संबंधी जानकारी आदि हो सकती है। इसके अलावा, उद्योग निर्मित वस्तुओं के लेबलों पर अथवा उनके साथ सप्लाई की जाने वाली पुस्तिकाओं, पर्चों, पैम्फलेटों आदि पर दी गई सूचना भी हो सकती है। व्यापक वर्ग के उपयोग के लिए दी गई वे सभी सूचनाएँ जो पढ़कर तात्कालिक समझी और उपयोग में लाई जाने वाली हों ऐसे पाठों के अंतर्गत आती है। इन सूचनाओं का अनुवाद विभिन्न भाषाओं के आम लोगों को तुरंत संप्रेषण की अपेक्षा रखता है। इस तरह के अनुवाद का मूल्यांकन संदेश के सही–सही संप्रेषण की दृष्टि से किया जाता है।

Evaluation में भी मूल रूप से अनुवाद की गुणवत्ता की ही जाँच की जाती है, लेकिन इस शब्द का प्रयोग विविध विषयों के पाठों और कृतियों के अनुवादों की जाँच के लिए

प्रयुक्त होता है। इसमें सूचनापरक और सार्वजनिक, दोनों के संदर्भ में प्रयुक्त गुणवत्ता की जाँच के साथ–साथ अनुवाद के महत्व की स्थापना भी शामिल होती है। यदि मूल्यांकन किसी साहित्यिक रचना का किया जा रहा है तो यह पता लगाया जाता है कि मूल कृति का संदेश अनुवाद में किस हद तक वहन हुआ है। अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवादक ने कृति में क्या छोड़ा है और क्या जोड़ा है? क्या कृतिकार के संदेश के अतिरिक्त कोई और संदेश भी अनुवाद वहन कर रहा है? यदि हाँ तो वह क्या है? अनुवाद की पुनःसृजन प्रक्रिया के दौरान क्या भाषा और भाव के स्तर पर कोई नूतन उद्‌भावना हुई है? यदि हुई है। तो वह किस कारण हुई है? अनुवादक की अपनी मनोभूमिका के कारण अथवा रचना और अनुवाद के बीच देश–काल के अंतराल के कारण? इस तरह के प्रश्नों के जवाब तलाशने के लिए Evaluation किया जाता है।

भाषा–शैली के स्तर पर भी मूल और अनुवाद की तुलना करते हुए अनूदित पाठ की जाँच की जाती है। फिर लक्ष्य भाषा की सृजनात्मक रचनाओं से अनूदित कृति की तुलना की जाती है।

## 20.3 अनुवाद मूल्यांकन की पद्धतियाँ

अनुवाद के मूल्यांकन के लिए कई पद्धतियाँ अपनाई गई हैं ताकि अच्छे अनुवाद की पहचान की जा सके। इन पद्धतियों को 'प्रभाववादी मूल्यांकन' और 'व्यवहारवादी मूल्यांकन' – दो वर्गों में रखा जा सकता है। प्रभाववादी मूल्यांकन में समीक्षक या मूल्यांकनकर्ता की एक 'विशेषज्ञ पाठक' के रूप में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त होती है। व्यवहारवादी मूल्यांकन में संभावित पाठकों की प्रतिक्रिया के आधार पर अनुवाद की सफलता को मापा और जाँचा जाता है। अनुवाद के मूल्यांकन की अनेक पद्धतियों का विकास हुआ है। इनमें से कुछ मुख्य का विवरण इस प्रकार है :

### 20.3.1 पुनरनुवाद/पुनःअनुवाद आधारित मूल्यांकन

पुनरनुवाद/पुनःअनुवाद आधारित मूल्यांकन पद्धति के अंतर्गत मूल पाठ के अनुवाद का स्रोत भाषा में पुनःअनुवाद किया जाता है। इसमें अनुवादक और पुनरनुवादक अलग–अलग व्यक्ति होते हैं। पुनरनुवादित पाठ की तुलना मूल पाठ से की जाती है। उसमें त्रुटियों को पहचाना जाता है। इस पद्धति से अनुवाद की शुद्धता और यथातथ्यता की जाँच कर अनुवाद की सफलता को मापा जा सकता है। पुनरनुवाद आधारित मूल्यांकन पद्धति वास्तव में इस तथ्य की जाँच के लिए बनाई गई पद्धति है कि मूल कथ्य से प्रकट होता संदेश, अनूदित पाठ से भी प्रकट हो रहा है या नहीं। इसकी जाँच अनूदित कथ्य को पुनः मूल भाषा में अंतरित करके की जाती है। उल्लेखनीय है कि इस मूल्यांकन पद्धति में यह नहीं देखा जाता कि अनूदित पाठ में अनुवाद सही किया हुआ है या गलत। उदाहरण के लिए, 'The train will leave at 5 P.M. from platform No. 4.' का अनुवाद 'गाड़ी शाम को पाँच बजे प्लेटफॉर्म नं. 4 से रवाना होगी।' को पुनः अंग्रेजी में लिखा जाए तो 'The train will leave at 5 P.M. from platform No. 4.' ही लिखा जाएगा।

लेकिन कई बार ऐसी स्थितियाँ भी आती हैं, जब अनूदित पाठ का पुनःअनुवाद करने पर वही अनुवाद नहीं होता जो मूल पाठ है। उदाहरण के लिए, वाक्य 'कड़े शब्दों में आप यहाँ जगह नहीं ले सकते हैं।' 'Strictly speaking, you cannot take a seat here.' और

उसके अनुवाद को देखिए। इस अनूदित वाक्य का यदि पुनःअनुवाद किया जाए तो वह होगा : 'In strict words you cannot take a place here.'

पुनःअनुवाद में 'कड़े शब्दों' के लिए 'in strict words' आया है और 'जगह' के लिए 'Place' जबकि मूल कथ्य में इन शब्दों का आशय है – 'सही–सही कहना' और 'बैठना'। इसलिए पुनःअनुवाद से वह आशय नहीं निकलता जो मूल शब्दों से निकलता है। ऐसा इसीलिए है क्योंकि अनुवाद में मूल का पूरा आशय नहीं आया। मूल का आशय प्रकट करते हुए सही अनुवाद होगा – 'सही–सही कहें तो आप यहाँ नहीं बैठ सकते।' इस वाक्य का पुनःअनुवाद करने पर वही आशय निकलेगा जो मूल कथ्य का निकलता है।

पुनरनुवाद पद्धति सूचनापरक पाठों के लिए विशेष रूप से उपयोगी होती है। यह पद्धति भाषापरक त्रुटियों की जाँच के लिए तो उपयोगी है, किंतु सामाजिक–सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के परिप्रेक्ष्य में अधिक कारगर सिद्ध नहीं होती है। उदाहरण के लिए, हिंदी का छोटा–सा वाक्य है – 'देखो तो सही।' इसका अनुवाद है – 'Please see'। इसका पुनरअनुवाद होगा – 'कृपया देखिए।' लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि 'देखो तो सही' वाला मूल भाव 'कृपया देखिए' में नहीं आ पाया है। इसके लिए पुनःअनुवाद अच्छा मापदंड सिद्ध नहीं हुआ।

अनुवाद करते समय हिंदी और अंग्रेजी भाषा के सांस्कृतिक संदर्भ को तलाशते हुए 'देखो तो सही' का अनुवाद 'Come, have a look' किया जा सकता है। लेकिन पुनरनुवाद कहीं भी पूर्णतः कारगर मापदंड सिद्ध नहीं होगा क्योंकि इसका पुनःअनुवाद 'आइए देखिए' भी हो सकता है और 'आओ देखें' भी। मूल पाठ में जो सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है, यह आवश्यक नहीं वह अनूदित पाठ में बोधगम्य और संप्रेषणीय बन सके। हिंदी में 'चरणामृत', 'पंचामृत' जैसे सांस्कृतिक संदर्भों वाले शब्द यूरोपीय समाज के लिए अपरिचित है। इसलिए, इनका पुनःअनुवाद सटीक अर्थ नहीं दे पाएगा।

### 20.3.2 अनुक्रिया आधारित मूल्यांकन

अनुक्रिया आधारित मूल्यांकन के अंतर्गत अनूदित पाठ का पाठकों से पाठन कराया जाता है और अनुक्रिया प्राप्त की जाती है। इसी आधार पर अनुवाद की गुणवत्ता को मापा जाता है। इस प्रक्रिया में इस बात का अवश्य ध्यान दिया जाता है कि अनूदित पाठ वही भूमिका निभाए जो मूल पाठ निभाता है। वास्तव में उत्तम अनुवाद वही है जो पाठक के मन पर वैसा ही प्रभाव डाले, जैसा प्रभाव मूल पाठ से उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए, प्रेमचंद के उपन्यास सामाजिक जीवन के जिन अभावों के यथार्थ चित्रण से पाठक में यथार्थ बोध और पीड़ा भाव उत्पन्न करते हैं वही भाव उनके अनुवाद (लक्ष्य भाषा) के पाठक में उत्पन्न करें। किंतु यह इतनी आसानी से संभव नहीं है। अनुवाद की अनुक्रिया प्रत्येक भाषा–भाषी की समसामयिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। भाषायी दृष्टि से अनुवाद समतुल्यता के सही चयन की दृष्टि से सफल तो हो सकता है, किंतु भूमिका–निर्वाह की पूर्ण समतुल्यता लाना संभव नहीं है।

अनुक्रिया आधारित एक अन्य पद्धति यह भी है कि समूचे मूल पाठ या उसके कुछ अंशों के वैकल्पिक अनुवाद तैयार कराए जाएँ और उनपर अलग–अलग पाठकों से यह अनुक्रिया प्राप्त की जाए कि कौन–सा अनुवाद सुनने में अधिक मधुर है, कौन–सा अधिक पठनीय है, कौन–सा अधिक बोधगम्य है आदि। इस पद्धति की भी अपनी सीमाएँ

हैं। इसमें अनेक अनुवादों की तुलना तो की जाती है लेकिन मूल कृति की तुलना में अनुवाद की यह जाँच नहीं हो सकती है कि वह कितना शुद्ध हुआ है। इसी पद्धति के आधार पर अनुवादशास्त्री नाइडा ने अनुवाद मूल्यांकन के तीन आधार बताए हैं। ये हैं:

क) **संप्रेषण प्रक्रिया में सहज प्रभाव :** पाठक या संग्राहक कम से कम श्रम में पाठ का अधिकतम अर्थ ग्रहण करता है तो वह अच्छा अनुवाद है।

ख) **कथ्य का बोधन :** यदि मूल पाठ में निहित सामाजिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यपरक कथ्यों का बोधन अनूदित पाठ में सहज रूप से होता है तो वह भी अच्छा अनुवाद माना जाएगा।

ग) **अनुक्रिया की समतुल्यता :** पाठक मूल पाठ के प्रति जिस प्रकार की अपनी अनुक्रिया व्यक्त करता है बिल्कुल उसी प्रकार की अनुक्रिया अनूदित पाठ के प्रति भी उसका पाठक व्यक्त करता है तो अनुवाद सफल माना जा सकता है।

अच्छे अनुवाद के संबंध में नाइडा ने जो ये आधार बताए हैं, वे परिभाषा के स्तर पर प्रभावकारी सिद्ध नहीं होते क्योंकि अनुक्रिया को मापना संभव नहीं है। इसलिए नाइडा ने एक अन्य अनुवादशास्त्री टेबर के सहयोग से इन आधारों में थोड़ा–बहुत परिवर्तन करके अच्छे अनुवाद के लिए तीन अन्य आधार सुझाए हैं। ये हैं :

क) **संदेश का सहज संप्रेषण :** अनूदित पाठ में संदेश इतना स्पष्ट हो कि पाठक मूल पाठ के संदेश के समान ही उसे आसानी से समझ सके।

ख) **पठनीय द्वारा बोधन :** अनूदित पाठ इतना सरल हो कि पाठक को उसके पठन से ही उसका आसानी से बोधन कर सके।

ग) **अनुवाद की पर्याप्तता से पाठक की अभिरुचि :** अनुवाद में इतनी पर्याप्तता और क्षमता हो कि वह पाठक को अपनी ओर आकर्षित कर सके और उसका पाठ के साथ तादात्म्य स्थापित हो सके।

अच्छे–बुरे अनुवाद में भेद करने के लिए ये आधार निर्भांत रूप से कार्य कर सकेंगे – इसमें शंका है क्योंकि इनमें वस्तुनिष्ठता और वैज्ञानिकता नहीं मिलती। इसलिए नाइडा और टेबर ने अनुक्रिया संबंधी प्रभाव को मापने के लिए चार प्रायोगिक अध्ययन किए। ये अध्ययन, 'क्लोज परीक्षण', 'पठनीयता', 'संप्रेषणीयता' तथा 'वाचन' पर आधारित थे। आइए, इन अध्ययन–आधारों के बारे में जानकारी हासिल करें।

## 20.4 अनुवाद मूल्यांकन के आधार

इस इकाई के भाग 20.3 में आपने यह पढ़ा कि नाइडा और टेबर ने अनुक्रिया संबंधी प्रभाव को मापने के लिए 'क्लोज परीक्षण', 'पठनीयता', 'संप्रेषणीयता' तथा 'वाचन' पर आधारित चार प्रायोगिक अध्ययन किए थे। किंतु इनमें भी कुछ न कुछ कमियाँ पाई गईं। इसके बाद इन दोनों विद्वानों ने अनुवाद मूल्यांकन के जो चार आधार प्रस्तावित किए, वे हैं – (क) क्लोज़ (cloze) परीक्षण, (ख) बोधन (Comprehension) परीक्षण, (ग) वाचन परीक्षण; और (घ) तुलनात्मक परीक्षण। आइए, इनके बारे में जानकारी हासिल करें।

### 20.4.1 सधन परीक्षण

इस पद्धति में अनूदित पाठ का प्रायः पाँचवाँ, सातवाँ, नवाँ आदि क्रम से शब्द हटा दिया जाता है। इसमें पचास रिक्तियाँ काफी हैं। इसके बाद पाठकों से इन रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए कहा जाता है। पाठक उस रिक्त स्थान पर जिस शब्द को उपयुक्त समझता है, उसकी पूर्ति कर देता है। इसके बाद पूर्तियों से मूल शब्दों का मिलान करके यह देखा जाता है कि पाठक के कितने अनुमान सही हैं। सही अनुमानों की जितनी अधिक संख्या होगी, वह अनुवाद उतना अधिक सरल और बोधगम्य माना जाएगा।

क्लोज परीक्षण, मूल्यांकन की एक अच्छी पद्धति तो है क्योंकि इससे अनुवाद की बोधगम्यता का परिचय मिल जाता है। किंतु मूल्यांकन की इस पद्धति की अपनी सीमाएँ भी हैं। यह सापेक्षिक परीक्षण भी है, जो अच्छे अनुवाद को चुनने में सहायता तो करता है लेकिन यह सिद्ध नहीं कर पाता कि वह स्वयं में कितना अच्छा है। इसके अतिरिक्त, स्थानों की पूर्ति करते समय पर्यायों के विकल्पों के आधार पर भी अनुवाद का सही मूल्यांकन नहीं हो पाता। मूल पाठ से संपर्क न हो पाने के कारण यह मूल्यांकन एक–पक्षीय रह जाता है।

### 20.4.2 वाचन परीक्षण

वाचन परीक्षण तीन प्रकार से होता है – (1) तीन–चार लोगों को अनुवाद का सस्वर वाचन करने के लिए कहा जाता है। इस पद्धति को अपनाकर यह देखा जाता है कि वाचक वाचन करते समय कहाँ–कहाँ अटकता है, हिचकता है या त्रुटियाँ करता है। इससे अनुवाद की सहजता का पता चलेगा। (2) किसी एक पाठक को अनूदित पाठ देकर यह कहा जाए कि वह इसे पढ़कर इसमें निहित सूचनाएँ अन्य लोगों तक पहुँचाए। वह जितनी अधिक सूचना पहुँचा पाएगा, अनुवाद उतना अच्छा माना जाएगा। (3) अनुवाद का पाठन ऊँचे स्वर में किया जाएगा। इस पाठन से कई त्रुटियाँ स्पष्ट हो जाएँगी।

वाचन परीक्षण की यह पद्धति सिद्धांत रूप में अच्छी लगती हैं, किंतु व्यावहारिक रूप में लंबी प्रक्रिया है। इसमें एक व्यक्ति की राय पर निर्भर न रहकर अनेक व्यक्तियों की राय मिलती है और उसमें भिन्नता की संभावना रहती है। इसमें विभिन्न व्यक्तियों के अपने ज्ञान और उसकी अभिव्यक्ति क्षमता का पता तो चल सकता है, लेकिन अनुवाद की कमियों की जानकारी नहीं मिल पाएगी और न ही अनुवाद के विभिन्न शैलीगत रूपों का पता चल पाएगा।

### 20.4.3 बोधन परीक्षण

बोधन परीक्षण के अंतर्गत किसी अनूदित पाठ पर आधारित ऐसे प्रश्न बनाए जाते थे जिनसे उसमें निहित सूचना तत्वों की पकड़ (समझ) का आकलन हो सके। यदि मूल पाठ में प्रयुक्त सामाजिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यवर्धक तथ्यों का अनूदित पाठ के माध्यम से बोध सहज रूप से होता है तो उसे अच्छा अनुवाद माना जाता है। यहाँ यह महत्वपूर्ण है कि प्रश्नकर्ता कौन है तथा क्या वह लक्षित पाठ का सही–सही आशय जान पाया है, या नहीं।

### 20.4.4 तुलनात्मक परीक्षण

तुलनात्मक परीक्षण, वास्तव में किसी उत्तम अनुवाद से तुलना करके किया जाता है। ऐसा करते हुए अनुवाद का मूल्यांकन करना भी एक निर्णायक आधार मान लिया गया जिसके चयन के लिए कुछ सक्षम निर्णायकों की राय ले ली जाती है और इसी के आधार पर विशिष्ट पाठक वर्ग से अनूदित पाठ से संबद्ध प्रश्न भी पूछे जाते हैं। उत्तम अनुवाद का चयन तथा अनूदित पाठ के साथ उसकी साम्यता का प्रश्न यहाँ महत्वपूर्ण माना जाता है।

ये सभी पद्धतियाँ उपयोगी होते हुए भी व्यावहारिक दृष्टि से अनुवाद का मूल्यांकन करने में पूरी तरह सक्षम नहीं थी क्योंकि इस संबंध में जो भी प्रयोग किए गए, वे या तो बहुत सीमित थे या बहुत कृत्रिम और जटिल। उदाहरण के लिए किसी उत्तम अनुवाद का चयन सक्षम निर्णायकों की राय से ही हो सकता है किंतु इन सक्षम निर्णायकों की वास्तविक क्षमता का निर्णय अपने में संदेहास्पद बन जाता है। इसके अतिरिक्त ये सभी मूल्यांकन पद्धतियाँ वस्तुनिष्ठ होने की अपेक्षा व्यक्तिनिष्ठ अधिक है और दूसरे, मूल पाठ से इसका कोई संबंध नहीं रखा गया जिससे जाँच करने पर सही एवं सटीक को खोज निकालने में सुविधा हो। इन पद्धतियों में बोधगम्यता की मात्रा को ध्यान में रखकर मूल्यांकन किया जाता है लेकिन अच्छे अनुवाद का मूल्यांकन मूल पाठ को बिना ध्यान में रखे सही नहीं हो सकता। इन परीक्षणों से पाठ की बोधगम्यता, प्रवाहशीलता, स्वाभाविकता आदि की जाँच तो की जा सकती है किंतु गुणवत्ता को नहीं मापा जा सकता। इन पद्धतियों की प्रतिक्रियास्वरूप अनुवाद मूल्यांकन में मूल पाठ के महत्व को समझते हुए अनूदित पाठ का मूल्यांकन करने की विधियाँ प्रस्तावित की गईं।

### 20.4.5 मूल पाठ पर आधारित मूल्यांकन

मूल पाठ पर आधारित मूल्यांकन विशिष्ट संदर्भ में उस भाषा के बोलने वालों के सामान्य मानक प्रयोग पर आधारित होता है। अनुवाद भाषिक प्रक्रिया के साथ–साथ सर्जनात्मक प्रक्रिया भी है और संदर्भपरक अर्थ के प्रतिपादन के लिए कई विकल्प भी मिल जाते हैं। इसलिए अनुवाद के मूल्यांकन में मूल पाठ के गहन विश्लेषण की अपेक्षा रहती है। मूल पाठ के विश्लेषण के लिए अनुवाद में कोशगत अर्थ के साथ–साथ संदर्भगत और पाठगत अर्थ भी होता है। संदर्भगत और पाठगत अर्थ वाक्योपरि संरचना में निहित होता है, जबकि कोशगत अर्थ शब्द और वाक्य स्तर पर ही अर्थवत्ता प्राप्त करता है। इसमें भाषिक और भाषेतर आधार मूल्यांकन में सहायता करते हैं। भाषिक स्तर पर शब्द, वाक्य, प्रोक्ति आदि – न केवल वर्ण्य विषय और अंतर–वाक्य संबंधों का पता चलता है, बल्कि पाठ के सामान्य और विशिष्ट गुणों की भी जानकारी मिलती है। भाषेतर स्तर में भाषा प्रयोक्ता और भाषा प्रयोग दोनों को दृष्टि में रखा जाता है। इसमें भौगोलिक, सामाजिक और प्रयुक्तिपरक आयाम काम करते हैं जो मूल्यांकन में सहायता करते हैं।

इस प्रकार अनुवाद मूल्यांकन न तो व्यक्तिनिष्ठ, एकपक्षीय और तदर्थ होगा और न ही मूल पाठ से कटा हुआ अनुक्रिया पर आधारित आंशिक मूल्यांकन। वह मूल पाठ और अनूदित पाठ का समतुल्यता के विशिष्ट आधार पर सर्वांगीण मूल्यांकन होगा। इससे अनुवाद में पाए जाने वाले विभिन्न दोषों का कारण ढूँढने में सहायता मिलेगी। वास्तव में, अनूदित पाठ का पाठक वह है जिसकी भाषा मूल पाठ की भाषा नहीं है, इसलिए अनूदित पाठ की अपनी एक स्वतंत्र सत्ता होती है। किंतु यह सत्ता तभी संभव है जब वह

अनुवाद अच्छा किया हुआ हो। अच्छे अनुवाद की पहचान के लिए कोई मानदंड होना चाहिए, जिनपर आगे चर्चा की जा रही है।

## 20.5 अनुवाद मूल्यांकन के मुख्य आयाम

आपको यह बताया गया है कि अनूदित पाठ की अपनी एक स्वतंत्र सत्ता होती है। लेकिन, यह सत्ता तभी संभव हो पाती है जब वह अनुवाद अच्छा किया हुआ हो। अच्छे अनुवाद की पहचान के लिए कोई मानदंड होना चाहिए। अनुवाद मूल्यांकन की दृष्टि से अच्छे अनुवाद में चार गुणों का होना अनिवार्य माना गया है–(1) मूलनिष्ठता, (2) पठनीयता, (3) बोधगम्यता, (4) प्रयोजन सिद्धि। आइए इनपर क्रमवार चर्चा करें।

**(1) मूलनिष्ठता :** अनूदित पाठ में उन सभी सूचना तत्वों का आना आवश्यक है, जो मूल पाठ में अभिप्रेत हैं। यही मूलनिष्ठता है। मूल पाठ के कथ्य या विषय–वस्तु का अंतरण करते हुए उसकी विधा या शैली को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। प्रयुक्ति के क्षेत्र में प्रशासन, विधि, विज्ञान की अपनी शब्दावली, शैली और मुहावरा होता है। इसलिए उसी के अनुरूप अंतरण की अपेक्षा रहती है। शब्द या वाक्य या प्रोक्ति के स्तर पर यदि मूल पाठ को पृष्ठभूमि में रखा जाता है तो सफल अनुवाद की संभावना अधिक रहती है।

**(2) पठनीयता :** पठनीयता की सबसे बड़ी कसौटी यह है कि अनुवाद अनुवाद न लगे, मूल लेखन जैसा प्रतीत हो। अच्छे अनुवाद की सबसे बड़ी पहचान यही है। पठनीयता का संबंध अभिव्यक्ति से है। एक कथ्य को अभिव्यक्त करने के लिए अनुवादक के पास कई विकल्प हो सकते हैं किंतु अनुवादक की सृजनात्मक शक्ति मूल पाठ की सीमाओं से बंधी है। इसलिए वह अपनी शिक्षा, अभिरुचि और ज्ञान के कारण उनमें से किसी एक विकल्प को चुनेगा। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि उसने जिस विकल्प का चयन किया है उसका सामान्यतः लक्ष्य भाषा का विकल्प होना आवश्यक है, अन्यथा वह बोधगम्य नहीं होगा। हालाँकि यह स्थिति कठिन है। यदि यह अनुवाद स्वाभाविक हो जाता है तो उसमें काफी मात्रा में बोधगम्यता और संप्रेषणीयता भी होगी।

**(3) बोधगम्यता :** पठनीयता और बोधगम्यता एक–दूसरे से जुड़े आयाम हैं। पठनीयता का संबंध जहाँ अभिव्यक्ति से है वहीं बोधगम्यता का संदेश से। यदि अनुवाद पठनीय होगा तो उसमें सहजता एवं स्वाभाविकता होने के साथ–साथ बोधगम्यता और संप्रेषणीयता भी होगी।

**(4) प्रयोजन सिद्धि :** यह तो आपने अनुवाद संबंधी चर्चा में अब तक जान लिया है कि अनुवाद कार्य एक सोद्देश्य व्यापार है। इसलिए अनुवादक ने जिस प्रयोजन के लिए अनुवाद कार्य किया, अगर वह उसमें सफल हो जाता है तो अनुवाद भी सफल हो जाता है। लक्ष्य भाषा का पाठक अगर मूल संदेश को भली–भाँति समझ एवं आत्मसात कर लेता है तो इसका अभिप्राय यह है कि वह उसका प्रयोजन भी सिद्ध समझ जाएगा। इस दृष्टि से यह अनुवाद लक्ष्य भाषा में स्वीकार्य होने पर अपने प्रयोजन को सिद्ध कर लेता है।

इस प्रकार मूलनिष्ठता, पठनीयता, बोधगम्यता और प्रयोजनसिद्धि के रूप में अनुवाद–मूल्यांकन के मुख्य आयामों और अनुवाद मूल्यांकन विविध संदर्भों के बारे में विस्तार से चर्चा करने के बाद, आइए अब हम अनुवाद समीक्षा की अवधारणा और उसके आयामों से परिचित हों।

## 20.6 अनुवाद – समीक्षा : स्वरूप और प्रकार

अनुवाद की जाँच के संदर्भ में प्रचलित एक अन्य शब्द है – 'अनुवाद समीक्षा'। अनुवाद समीक्षा अनुवाद सिद्धांत का अनुप्रायोगिक पक्ष है। 'अनुवाद समीक्षा' का अभिप्राय मूल पाठ की तुलना में अनूदित पाठ के गुण दोष का विवेचन और अनूदित पाठ का लक्ष्य भाषा की साहित्यिक कृतियों के बीच मूल्यांकन से है। इसके अंतर्गत विवेचन अनुवाद सिद्धांत की मान्यताओं के आधार पर तो किया ही जाता है अनूदित कृति को स्वतंत्र पाठ के रूप में भी जाँचा–परखा जाता है। इसका संबंध अनुवाद कार्य की निष्पत्ति से है जो अनुवाद की स्तरीयता की ओर ध्यान दिलाता है। वास्तव में अनुवाद कार्य का अध्ययन अनुवाद समीक्षा है जिससे अनुवाद की गुणवत्ता और स्तरीयता का पता चलता है।

'अनुवाद समीक्षा' अपनी प्रकृति और महत्व के कारण एक स्वतंत्र विधा है। जिस प्रकार साहित्य समीक्षक के लिए साहित्य सर्जक होना अनिवार्य नहीं है, उसी प्रकार अनुवाद समीक्षक के लिए अनुवादक होना भी अनिवार्य नहीं है, लेकिन उसे अनुवाद मर्मज्ञ अवष्य होना चाहिए। यदि अनुवाद समीक्षक अनुवादक हो तो वह समीक्षा में अधिक प्रभावकारी भूमिका निभा सकता है।

'अनुवाद समीक्षा' में अनुवाद के कौशल के मूल्यांकन के साथ–साथ लक्ष्य भाषा की अभिव्यक्ति के संसाधनों का भी मूल्यांकन शामिल है। इसमें यह देखा जाता है कि मूल पाठ के विभिन्न पक्षों का उपयुक्त और सही अंतरण किस सीमा तक हुआ है। इसमें भाषायी और भाषेतर दोनों पक्षों की जाँच समन्वित रूप में होती है। वास्तव में अनुवाद समीक्षा से अनुवाद की स्तरीयता को ऊँचा उठाने में सहायता मिलती है। अनूदित पाठ के गुणों और दोषों का विवेचन पर उसकी त्रुटियों के बारे में जानकारी मिलती है जिससे अनुवाद के स्तर को सुधारा जा सके। यह श्रेष्ठ अनुवाद के मानक स्थापित करता है जो अनुवाद को अधिक बेहतर बनाने में कारगर सिद्ध होते हैं।

अनुवाद समीक्षा से मूल भाषा और लक्ष्य भाषा की भाषिक और शैलीपरक असमानताओं की समीक्षा की जा सकती है, जो दोनों भाषाओं के व्यतिरेकी अध्ययन में सहायक होती है। इसके साथ ही अनुवाद समीक्षा से महत्वपूर्ण लेखकों की रचनाओं और महत्वपूर्ण अनुवादकों के अनुवाद कार्य के विवेचन तथा मूल्यांकन में सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए, राजा लक्ष्मण सिंह द्वारा किए गए 'अभिज्ञान शाकुंतलम' के अनुवाद 'शकुंतला नाटक' की समीक्षा से मूल पाठ की सूक्ष्मताओं का परिचय मिलता है और अनुवाद कार्य के आदर्श रूप का परिचय मिलता है।

अनुवाद समीक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षणपरक भी है। अनुवाद समीक्षा से अनुवाद–शिक्षार्थी की अनुवाद संबंधी दृष्टि को व्यावहारिक स्तर पर विकसित किया जा सकता है। इस प्रकार अनुवाद समीक्षा एक स्वस्थ और उपयोगी अनुवाद समीक्षा में अनूदित पाठ का विवेचन, मूल अभिप्राय, प्रतिपाद्य, भाषा प्रकार्य, प्रयुक्ति, भाषा, शैली; साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं तथा पाठक वर्ग के संदर्भ में किया जाता है। इन्हीं संदर्भों में मूल पाठ के साथ तुलना की जाती है तथा आकलन करते हुए अनुवाद दोषों का विवेचन किया जाता है। इस प्रकार अनुवाद की सफलता की जाँच करना और उसे मापना अनुवाद समीक्षा के अंतर्गत आता है जिसमें वस्तुनिष्ठ दृष्टि से अनुवाद की गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जाता है।

**अनुवाद समीक्षा के दो प्रकार हैं** – (1) साहित्यिक पाठ की अनुवाद समीक्षा; और (2) साहित्येतर पाठ के अनुवादों की समीक्षा। साहित्यिक पाठ की अनुवाद समीक्षा के भी दो आयाम हैं – (क) वर्णनात्मक अनुवाद समीक्षा; और (ख) तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा। इनके बारे में इकाई के अगले भाग में चर्चा की जा रही है।

## 20.7 अनुवाद–समीक्षा : साहित्यिक पाठ का संदर्भ

जैसा कि इस इकाई के पिछले भाग में आपको यह बताया गया है कि अनुवाद समीक्षा के दो प्रकार हैं – साहित्यिक पाठ की अनुवाद समीक्षा; और साहित्येतर पाठ के अनुवादों की समीक्षा। साहित्यिक पाठ की अनुवाद समीक्षा के भी दो आयाम हैं – वर्णनात्मक और तुलनात्मक। आइए, इनके बारे में जानकारी हासिल की जाए।

### 20.7.1 वर्णनात्मक अनुवाद समीक्षा

जैसा कि शीर्षक से ही पता चलता है, वर्णनात्मक अनुवाद समीक्षा के अंतर्गत मूल पाठ से अनुवाद का मिलान करते हुए समीक्षा की जाती है। जैसे, स्रोत भाषा के द्वारा अभिव्यक्त विचारों, भावों तथा संवेदनाओं की रक्षा करते हुए अनुवादक कविता को लक्ष्य भाषा में पुनःसृजित करता है। इसकी अनुवाद समीक्षा करते समय संरचना और शिल्प, दोनों स्तरों पर मूल्यांकन किया जाता है। उदाहरण के लिए हम 'कामायनी' के अंग्रेजी अनुवाद का एक पद्य देखिए। साथ में उसकी समीक्षा करने का प्रयास किया गया है। 'कामायनी' महाकाव्य के प्रथम सर्ग 'चिंता' (Reflection) की प्रथम पंक्तियों का जो अनुवाद किया है, उस की समीक्षा इस प्रकार है :

**मूल** :

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छाँह
एक पुरूष भीगे नयनों से
देख रहा था प्रलय प्रवाह।

**अंग्रेजी अनुवाद** :

Upon the Himalaya's lofty peak
In the cool shade of an overhanging cliff
A person sat who with wet eyes surveyed
The flowing current of The Flood of Doom.

(Trans. by B.N. Sahani)

इस उदाहरण में अनुवादक ने विदेशी भाषा अंग्रेजी की प्रकृति के अनुरूप ही अनुवाद प्रस्तुत किया है। मूल तथा अनुवाद दोनों में आदि मानव की सृष्टि भारत में होने की ओर संकेत किया गया है। मूल के 'एक पुरुष' का अनुवाद 'A person' करके अनिश्चय की भावना को अनुवादक ने मूल लेखक की भाँति ही व्यक्त करने की चेष्टा की। 'शिला' का अनुवाद 'over hanging cliff' तथा 'देख रहा था' का अनुवाद 'surveyed' किया गया है। सामान्य रूप में 'surveyed' शब्द का 'जाँच' या 'सर्वेक्षण' के लिए प्रयोग होता है। लेकिन यहाँ 'surveyed' का उपयोग 'चारों ओर देख रहा था' के भाव को मजबूत करने के लिए किया। उसी प्रकार 'प्रलय प्रवाह' का अनुवाद 'The flowing current of the Flood of Doom' किया गया। इससे 'प्रलय प्रवाह' की सर्वविनाशकारी शक्ति की

ओर संकेतित करने के लिए अनुवादक ने अंग्रेजी भाषा की संरचना को ध्यान में रखकर प्रयोग किया। इस प्रकार अनुवादक की भावुकता और भाषा पर उसके अधिकार दोनों का पता चलता है। अनुवादक द्वारा स्वयं भारतीय होने के कारण भारतीय संस्कृति, परिवेष आदि को सृजित करने का यथासंभव प्रयास किया हुआ दिखता है। एक अन्य उदाहरण गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित 'रामचरितमानस' के अंग्रेजी अनुवाद के अंश के एक अन्य उदाहरण रूप में द्रष्टव्य होगा।

**मूल** : बंदउँ गुरू पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु, वचन रबि कर निकर।।5।।

**अनुवाद** : I bow to the lotus feet of my Guru, who is an ocean of mercy and is no other than Sri Hari Himself in human form, and whose words are sunbeams as it were for dispersing the mass of darkness in the form of gross ignorance.

उपर्युक्त अनुवाद में मूल में प्रयुक्त 'नरहरि' का लिप्यंतरण 'Sri Hari' करते हुए आगे 'Himself in human form' कहा है और 'पद कंज' के लिए सामान्यतः प्रयुक्त Lotus feet ही रखा गया है। यह lotus feet विदेशी पाठकों के लिए कई बार बोधगम्य नहीं हो पाता। अनुवाद गद्यात्मक है तथा विशद्ता–वर्णन से भाव व्यक्त किया गया है। दूसरी पंक्ति के भाव को शाब्दिक Sunbeam तथा महामोह को Mass of darkness द्वारा अनूदित किया गया है। यहाँ मूल की लय तो नहीं है परंतु कथ्य की रक्षा की गई।

## 20.7.2 तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा

तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा में मूल पाठ के साथ उसके एक से अधिक अनुवादों की समीक्षा की जाती है। विभिन्न अनुवाद को तुलनात्मक दृष्टि से देखते हुए उनकी उपलब्धियों और सीमाओं का विश्लेषण किया जाता है। तुलनात्मक अनुवाद समीक्षा के उदाहरण के रूप में हमने यहाँ शेक्सपियर के 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' के दो अनुवादों को लिया। एक अनुवाद भारतेंदु हरिश्चंद्र का 'दुर्लभ बंधु' नाम से दूसरा रांगेय राघव का 'वेनिस का सौदागर' नाम से उपलब्ध है। यहाँ मूल नाटक के साथ दोनों अनुवादों का कुछ अंश प्रस्तुत किया गया है :

### मूल नाटक से उद्धरण (अंक 3 दृश्य 2)

Por, Away then: I am lock'd in one of them;
If you do love me, you will find me out.—
Nerissa, and the rest, stand all aloof.—
Let music sound, while he doth make his choice;
Then, if he lose, he makes a swan-like end,
Fading in music : that the comparison
May stand more proper, my eye shall be the stream,
And wat'ry death-bed for him : He may win;
And what is music then? Then music is
Even as the flourish when true subjects bow
To a new-crowned monarch: such it is,
As are those dulcet sound in break of day,

That creep into the dreaming bridegroom's ear,
And summon him to marriage. Now he goes,
With no less presence, but with much more love,
Than young Alcides, when he did redeem
The virgin tribute paid by howling Troy
To the sea-monster : I stand for sacrifice,
The rest aloof are the Dardanian wives,
With bleared visages, come forth to view
The issue of the exploit. Go, Hercules!
Live thou, I live; - With much, much more dismay
I view the fight, than thou that mak'st the fray.
Music, whilst Bassanto comments on the caskets to himself.

### 1. भारतेंदु द्वारा 'अनुवाद'

**पुरश्री :** अच्छा तो आप जाएँ, उन संदूकों में से एक में मेरा चित्र है; यदि आप मुझे चाहते होंगे तो वह आपको मिल जाएगा। नरश्री तुम अब अलग खड़ी हो जाओ और जब आप संदूक पसंद करने लगें तो कुछ गाना का भी आरंभ हो, जिसमें यदि आप कहीं चूक जाएँ तो जैसे बत्तख अपना दम निकालने के समय गाता है वैसे ही आप के बिंदा होने के समय भी गाना होता रहे। यदि कहिए कि बत्तख की समाधि पानी में होती है तो मेरी आँखें नदी बनकर आपके शत्रुओं की समाधि बन जाएगी। यदि कहीं आपने दाँव मारा तो गाना क्या है मानो उस समय की सलामी का बाजा है जब कोई नया राजा सिंहासन पर बैठता है और उसकी शुभचिंतक प्रजा उसके अभिनंदन को आती है, या वह मीठी तान है जिसे सुनकर नया वर विवाह के दिन सबेरे ही उठकर ब्याह की तैयारी करता है। देखिए वह जाते हैं। जब रुद्र उस कुमारी को छुड़ाने गया था जिसे त्र्यंम्बक ने समुद्र की एक आपत्ति को सौंप दिया था तो जैसा तेज उसके मुख पर बरसता था वैसा ही उनके मुँह पर बरसता है परंतु प्रेम तो उसकी अपेक्षा कई अंश अधिक है। मैं भी उस कुमारी की भाँति बलिदान के लिए प्रस्तुत हूँ और यह स्त्रियाँ मानो त्र्यंम्बक की रहने वाली हैं और वियोगिन बनी हुई खड़ी देख रही हैं कि इस दुस्तर कर्म का क्या परिणाम होता है। अच्छा मेरे रुद्र जाओ, अब तो मेरा जीवन तुम्हारे प्राण के साथ है। और निश्चय रखिए कि आपका चित्त यद्यपि आप स्वयं लड़ने जाते हैं, इतना न धड़कता होता जितना मेरा धड़कता है यद्यपि मैं केवल दूर से खड़ी हुई कौतुक देख रही हूँ।

### 2. रांगेय राघव द्वारा अनुवाद

**पोर्शिया :** अच्छी बात है, चलो। मैं इनमें से एक में बंद हूँ। यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो अवश्य मुझे ढूँढ निकालोगे। नैरिसा और सब लोग एक तरफ हो जाओ। चुनाव के समय मधुर संगीत होने दो, ताकि यदि ये असफल भी हो गए तो उस हंस के समान संगीत–माधुरी में तन्मय लौट सकें जो कि मरते समय गाता है[1]। और उस तुलना को पूर्ण करने के लिए मेरे नयनों से गिरते अश्रु काम देंगे। किंतु यदि ये सफल होते हैं तो संगीत ही तूर्यनाद हो जाएगा, जैसे कि सिंहासनारोहण करते समय नए राजा के लिए होता है। और यह संगीत उतना ही मधुर होगा, जितना कि सुख निदिया से दुल्हे को विवाह के दिन के लिए जगाने वाला संगीत होता है। बैसेनियो महावीर हरक्यूलीज की

1 कवि सत्य – यूरोप में प्रचलित

भाँति बढ़ते हैं, किंतु हरक्यूलीज तो केवल योद्धा था, उसमें इनका सा प्रेम कहाँ था! ठीक वैसे ही जैसे ट्रॉय के राजा लाओमिडॉन की पुत्री हिसीओन को उस समय हरक्यूलीज छुड़ाने गया था जबकि ट्रॉय की रोती हुई प्रजा राजकुमारी को समुद्री दैत्य की बलि चढ़ाने जा रही थी। मैं खड़ी हूँ यहाँ उसी हिसिओन की भाँति, और यह नैरिसा, ये मेरी सेविकाएँ खड़ी हैं उन ट्रॉय नगरवासिनी स्त्रियों की भाँति जो उस महान साहसपूर्ण कार्य को अश्रुपूर्ण नयनों से देख रही थी।

बढ़ो! मेरे हरक्यूलीज! तुम्हारी सफलता पर मेरा जीवन, मेरे जीवन का आनंद निर्भर है। यदि तुम असफल होते हो तो वही मेरे लिए मृत्यु है। मैं इस संघर्श को तुमसे भी अधिक लगाव से देखूँगी, क्योंकि तुम भी इससे उतने प्रभावित नहीं होओगे। (बैसेनियो जब डिब्बों का निरीक्षण करता हुआ अपने–आप से बोलता है तब संगीत सुनाई देता है।)

**भारतेंदु के अनुवाद पर टिप्पणी :**

भारतेंदु द्वारा अनुवाद की समीक्षा करते हुए हम पाएँगे कि उन्होंने शेक्सपियर के नाटक के कथ्य को हिंदी में भाषांतरित करने के साथ–साथ उसका सांस्कृतिक अंतरण भी कर दिया है। इसलिए सभी पात्रों के नाम भारतीय हो गए हैं। 'एंटोनियो' (Antonio) 'अनंत' हो गया है, 'पोर्शिया' (Portia) 'पुरश्री', 'बेसेनियो' (Bassanio) 'बसंत' हो गया है और 'सोलिनियो', 'सलोने'। इसी तरह स्थान का नाम 'वेनिस' (Venice) 'बंसपुर' हो गया है और 'बेल मोंट' (Belmont) 'बिल्व मठ', 'ट्रॉय' (Troy) 'त्र्यंबक' हो गया है तथा उपाधि 'ड्यूक' (Duke) 'मंडलेश्वर'। नाटक में आए पौराणिक और मिथक संदर्भों का भी भारतीयकरण करते हुए Hercules को 'रूद्र' और 'मानसिंह' तथा Mars को 'विजयसेन' कर दिया गया है। नाम, स्थान पौराणिक संदर्भ आदि बदलने में अनुवादक का उद्देश्य रचना के एक भाषा संस्कृति से दूसरी भाषा संस्कृति में अंतरित करना रहा है जिससे पाठक अनूदित रचना से तादात्म्य स्थापित कर सकें और अनुवाद में मूल का–सा आनंद उठा सकें।

भाव एवं संवेदना के स्तर पर अनुवाद शेक्सपियर के नाटक के पर्याप्त निकट रहने पर भी यह अनूदित रचना हिंदी भाषा की रचनाओं में अपना स्थान बनाती है। इसके लिए इसकी भाषिक सृजनशीलता और सांस्कृतिक अंतरण दोनों ही जिम्मेदार हैं। अनुवाद में इस अंतरण को देश–काल की दृष्टि से भी परखा जाना चाहिए। भारतेंदु काल में अधिकांश हिंदी पाठक अंग्रेजी भाषा और जीवन पद्धति से उतने परिचित नहीं थे जितने कि आज हैं। ऐसे पाठक वर्ग को दृष्टि में रखते हुए नाटक का भारतीयकरण रचना से तादात्म्य स्थापित करने की दृष्टि से प्रासंगिक है।

हालाँकि नामों के रूपांतरण के प्रयास में उन्हें कई बार उनसे जुड़ी कथा का भी रूपांतरण करना पड़ा है। उपर्युक्त उदाहरण में माइडास को महाराजा मागधि कहने पर उनसे संबद्ध लोहे के चने चबाने की कथा रखनी पड़ी है जबकि माइडास जो चीज छू लेता था वह सोना हो जाती थी अंततोगत्वा उसका भोजन भी सोना हो गया था। हिंदी भाषा के बोलचाल के स्वरूप को लाने की दृष्टि से अनुवाद में मुहावरेदार भाषा का इस्तेमाल किया गया है।

**रांगेय राघव के अनुवाद पर टिप्पणी :**

रांगेय राघव का अनुवाद भारतेंदु के अनुवाद से करीब 60–70 वर्ष बाद का है। इसके

समय तक हिंदी पाठक पश्चिमी जीवन संस्कृति से काफी परिचित हो चुका था। अनुवादक ने नामों और स्थानों में कोई परिवर्तन नहीं किया है। भाषा संस्कृति में अंतरण की आवश्यकता उन्होंने महसूस नहीं की।

**भारतेंदु और रांगेय राघव के अनुवादों की तुलनात्मक समीक्षा** :

'दुर्लभ बंधु'' की भाषा में जहाँ भावावेग की प्रबलता है वहीं 'वेनिस का सौदागर' की भाषा में गद्य की वैचारिकता और तार्किकता है। मुहावरा बोलचाल का ही है लेकिन भाव के स्थान पर विचार और तर्क की प्रधानता वास्तव में दो समयों के अंतर का बोध कराती है। रांगेय राघव ने पश्चिमी नामों को रखा है। संस्कृति की दृष्टि से जहाँ ऐसा ऐसा लगा है कि पाठक को संदर्भ समझ नहीं आएगा, वहाँ पाद–टिप्पणी (फुटनोट) दे दी है। जैसे मरते समय हंस के गीत के विषय में बताया है कि यह यूरोप की काव्य–रूढ़ि है। इसी तरह माइडास के प्रसंग में उससे संबंधित कथा पाद–टिप्पणी में दी है। लेकिन भारतेंदु के अनुवाद में भारतीय पाठक–दर्शक की संवेदना का विशेष ध्यान रखा गया है। उदाहरण के लिए, पोर्शिया (पुरश्री) द्वारा बेसेनियो (बसंत) के लिए प्रयुक्त 'My eyes shall be stream and wat'ry death ..bed for him' का अनुवाद भारतेंदु ने किया है 'मेरी आँखें नदी बन कर आपके शत्रुओं की समाधि बन जाएगी।'

यहाँ मूल में बेसेनियो की हंस जैसी मृत्यु और जल–समाधि का संकेत है लेकिन हिंदी की कथन शैली में ऐसा कहना अमंगल का सूचक होगा। अतः 'आपके शत्रुओं की समाधि कहा गया है।'

रांगेय राघव ने हंस जैसी मृत्यु के प्रसंग के साथ पाद–टिप्पणी दी है और जल–समाधि के प्रसंग को छोड़ दिया है क्योंकि हिंदी पाठक अथवा दर्शक के सामने कहीं गई यह बात प्रभावपूर्ण न होती। भारतेंदु के अनुवाद में कहीं–कहीं संवादों का पद्यानुवाद भी है।

## 20.8 अनुवाद समीक्षा : साहित्येतर विषयों का संदर्भ

अखिल भारतीय स्तर पर कामकाज की भाषा के रूप में, हिंदी के विकास में अनुवाद एक अनिवार्यता बनकर उभरा। भारत में यही से साहित्येतर अनुवाद की बहुआयामी दिशाएँ खुलनी शुरू हुई। पूरे विश्व में अनुवाद सिद्धांत के प्रमुख प्रारंभिक चिंतक साहित्यिक अनुवाद के स्वरूप, प्रकृति प्रक्रिया और समस्याओं पर ही विचार करते हुए दिखाई पडते हैं इसलिए दशकों तक अनुवाद की सैद्धांतिक पीठिका साहित्यिक पाठ से संबंधित समस्याओं को ही केंद्र में रखकर तैयार की जाती रही है। यहाँ यह स्पष्ट दिखाई देता है कि अनुवाद सिद्धांत के प्रणेता साहित्य के मर्मज्ञ थे या स्वयं साहित्य सर्जक। लेकिन आज अनुवाद की परिभाषा बहुत कुछ बदल चुकी है, क्योंकि आज विश्व संप्रेषण का एक बहुत बडा अंश अनुवाद पर टिका हुआ है। अतः आज भी यदि हम अनुवाद के परिप्रेक्ष्य को मात्र साहित्यिक अनुवाद (Translation of Creative Writing) तक ही सीमित करके रह जाएँगे तो भाषिक, सामाजिक और प्रकार्यगत उन स्थितियों से विलग हो जाएँगे जिन में भाषा अपनी विभिन्न भूमिकाओं के साथ अलग–अलग रंग और तेवर में हमारे बीच स्थित है।

पिछले कुछ दशकों में अनुवाद ने एक आधुनिक शास्त्र के रूप में अपनी पहचान बनाई। इस संदर्भ में साहित्यकार ही नहीं बल्कि भाषाविज्ञानी, सूचना विशेषज्ञ, तर्कशास्त्री और

अर्थशास्त्रियों जैसे विभिन्न ज्ञान क्षेत्र के लोगों ने भी विचार प्रारंभ किया। इस तरह अंतर–विद्यावर्ती के रूप में साहित्य से इतर सामग्री को भी महत्व देने लगे और इनके अनुवाद कार्य को गंभीरता से देखने की दृष्टि भी उभरी। इस प्रकार साहित्येतर पाठ की अनुवाद प्रणाली और प्रक्रिया पर साहित्यिक अनुवाद की प्रचलित प्रणाली और प्रक्रिया से भिन्न स्तर पर बातचीत शुरू हुई। साहित्येतर पाठ की समीक्षा के संदर्भ में भी मंथन शुरू हुआ। सामाजिक उपादेयता की दृष्टि से भाषाविज्ञानियों ने उसे उपनिवेशवादी शासन से मुक्त करके देखना शुरू किया, क्योंकि आज वैश्वीकरण/भूमंडलीकरण के दृष्टिकोण से हर संदर्भ में चर्चा चल रही हैं। आधुनिक समाज उपभोक्ता सापेक्ष (Consumer oriented) है। इसलिए आज अनुवाद रागात्मक पाठ (Emotive text) से तथ्यपरक पाठ (Factual/ Informative text) की ओर उन्मुख हुआ है। इससे हमारी जरूरतें भी बढ़ी और बदली हैं। सामाजिक और आर्थिक ढाँचा भी बदला। नित नई संकल्पनाएँ नए विचार और ज्ञान विभिन्न भाषाओं में प्रवाहित होने लगा है। जिसके अनुवाद करने के लिए निरंतर प्रयास हो रहे हैं। आज साहित्यिक अनुवाद की अपेक्षा साहित्येतर अनुवाद को महत्व मिलने लगा है। सहित्येतर पाठ के संदर्भ में रॉबर्ट एडम्स का कहना है कि 'अब अनुवाद जैसे ज्ञान क्षेत्र को साहित्यिक सामग्री तक सीमित नहीं रखा जा सकता। साहित्येतर विषयों के क्षेत्र और विश्व संपर्क के अनंत मार्ग खुल गए हैं।'

साहित्य पाठ के संदर्भ में अनुवाद समीक्षा के बिंदुओं पर हम पहले चर्चा कर चुके है। इस संदर्भ में सुरेश कुमार का कहना है कि अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन में पाठ केंद्र में होता है। यह पाठ साहित्यिक भी हो सकता है या साहित्येतर भी। अतः हम मूल भाषा और लक्ष्य भाषा के पाठ के शब्दकोश तथा व्याकरण और भाषा–शैली एवं पाठ–प्रारूप संबंधी असमानताओं का समीक्षात्मक अध्ययन करते हैं।

भाषाविद दिलीप सिंह ने अनुवाद समीक्षा के अंतर्गत साहित्येतर पाठ की अनुवाद समीक्षा करने के लिए कुछ बिंदु या सोपान निर्धारित किए हैं। इन बिंदुओं को निम्न प्रकार देख सकते हैं :

(1) पारिभाषिक शब्दावली की अनुवाद समीक्षा;

(2) अभिव्यक्ति क्षमता की दृष्टि से अनुवाद समीक्षा;

(3) अंग्रेजी प्रभाव की अनुवाद समीक्षा;

(4) साहित्येतर अनुवाद की दो दिशाएँ और अनुवाद समीक्षा;

(5) साहित्येतर अनुवाद की समीक्षा – पाठपरक;

(6) साहित्येतर अनुवाद की समीक्षा – प्रक्रियापरक; और

(7) संप्रेषण और अनुवाद समीक्षा।

आइए, अब इन बिंदुओं का विस्तार उदाहरणों के साथ देखें।

**i) पारिभाषिक शब्दावली की अनुवाद समीक्षा :** पारिभाषिक शब्दावली की अनुवाद समीक्षा करते समय समीक्षक को विषय का सम्यक ज्ञान होना चाहिए। अनुवादक को भी विषय के साथ–साथ दोनों भाषाओं का सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान होना आवश्यक है। अर्थ ग्रहण, पर्याय निर्धारण, पुनर्रचना, शब्द निर्माण आदि स्तरों पर समीक्षक समीक्षा कर सकता है। इन धरातलों पर अनुवादक की दक्षता और कुशलता दिखाई देती है।

उदाहरण के लिए, 'Petrology' का अनुवाद 'पेट्रोल विज्ञान', 'Labour Room' का अनुवाद 'श्रमिक कक्ष' करने से अर्थ का अनर्थ होता है, जबकि सही अनुवाद क्रमशः 'शैलिकी' (Study of origin & structure of rocks) तथा 'प्रसूति गृह' होता है। ऐसे ही 'Snow/ice', 'बर्फ', अंग्रेजी में बर्फ का अनुवाद यदि संयंत्र जमा हुआ बर्फ हो, तो Ice और ऊँचे पर्वतों या अत्यंत शीतावस्था में 'प्राकृतिक हिमपात' यानी Snow का प्रयोग होता है; हिंदी में भी बर्फ/हिम विशेष संदर्भ में प्रयुक्त होते हैं। लेकिन प्रायः बर्फ का प्रयोग होता है। इसी प्रकार के कुछ और उदाहरण देखिए:

| | | |
|---|---|---|
| General | - | सामान्य / आम / सार्वजनिक / मुख्य / प्रधान / महा / जनरल आदि |
| Electricity | - | बिजली / विद्युत / तड़ित / दामिनी |
| AIR | - | आकाशवाणी / देववाणी / ऑल इंडिया रेडियो |
| Open | - | विवृत्त / खुला / मुक्त |
| Parliament | - | संसद / परिषद् / न्यायालय / धार्मिक संस्था / धर्म सम्मेलन |
| Poison/ venum/toxins | - | विष / जहर |

**ii) अभिव्यक्ति क्षमता की दृष्टि से अनुवाद समीक्षा** : साहित्येतर पाठ में अभिव्यक्तियों का प्रयोग प्रयुक्ति के अनुसार होता हैं। वार्ता–क्षेत्र, वार्ता प्रकार और वार्ता–शैली के अनुसार देखा जाता है। आज के बदलते परिवेश में भाषायी दायित्वों और विकसित होते व्यवहार क्षेत्रों को देखते हुए क्या यह कहा जा सकता है कि किसी भाषा में साहित्य सृजन बड़ी मात्रा में हो रहा है, जबकि भाषा व्यावहारिक भाषा के रूप में ही अपना विकास कर पाती है। यानि जीवन के हर क्षेत्र में प्रयुक्त होकर ही भाषा का विकास होता है। आज भारतीय भाषाएँ अपने–अपने राज्यों की राजभाषाएँ हैं। फिर भी इन्हें अपने ही प्रयोग–क्षेत्र में सम्मान क्यों नहीं मिल रहा है? अभिव्यक्ति क्षमता, संप्रेषणीयता और प्रयोजनमूलकता पर उँगली उठाने में संकोच नहीं करते। अंग्रेजी के साथ इनकी तुलना करते हैं। अनुवादनीयता और अनुवाद समीक्षा की सैद्धांतिक प्रणाली के अनुप्रयोग द्वारा विभिन्न क्षेत्रो की हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का स्वरूपगत विश्लेषण कर सकते हैं। अंग्रेजी–हिंदी अनुवादों को उदाहरण के रूप में देख सकते हैं :

1) **मूल** : The judegement is reserved
   **अनर्थ** : निर्णय आरक्षित किया जाता है।
   **प्रस्तावित** : निर्णय बाद में दिया जाएगा।
2) **मूल** : The court was seized of the matter
   **अनर्थ** : न्यायालय ने उस पदार्थ को ग्रहण कर लिया।
   **प्रस्तावित** : यह विषय न्यायालय के विचाराधीन था।

इन उदाहरणों में विशिष्ट प्रयुक्तिपरक अर्थ ही अनुवाद में अपेक्षणीय है।

**iii) अंग्रेजी प्रभाव की अनुवाद समीक्षा :** स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद निश्चित अवधि में अपनी भाषाओं के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया संपन्न की जानी थी। अवधि की सीमा के कारण मूल भाषा अंग्रेजी के सहारे अनुवाद के माध्यम से हम अपनी भाषाओं के

प्रयोजनमूलक विस्तार कार्य में संलग्न हुए। इसका प्रभाव हिंदी के साथ–साथ अन्य भारतीय भाषाओं पर भी पड़ा। डॉ.कैलाशचंद्र भाटिया का कहना है 'क्या हम भूल गए है कि भारतीय भाषाओं के बिना पूर्ण स्वराज्य का सपना अधूरा है। स्वतंत्रता के साथ हमारा सारा कार्य भारतीय भाषाओं में होना चाहिए था'। बैंकिंग अनुवाद के संदर्भ में वे कहते है कि 'हिंदी अंग्रेजी की तुलना में कहीं अधिक समर्थ है, क्योंकि इसमें अंग्रेजी के एक शब्द के लिए एकाधिक पर्याय उपलब्ध है। जैसे – 'Credit' के लिए साख, उधार, लेनदेन आदि'। अन्य विद्वानों के मतानुसार अनुवादक में यदि अनुवाद कौशल उत्पन्न किया जाए तो वह सामान्य भाषा और विषय ज्ञान के सहारे भी साहित्येतर क्षेत्र में अच्छा अनुवाद कर सकता हैं। अनुवाद समीक्षा द्वारा प्रभाव को पहचाना जा सकता है। हिंदी–तेलुगु और हिंदी–अंग्रेजी के कुछ उदाहरण दिए जा रहे हैं :

| **हिंदी** | | **तेलुगु** |
|---|---|---|
| उपन्यास | – | भाषण (उपन्यासमु के संदर्भ में) |
| प्रपंच | – | दुनिया (देशों के अर्थ में) |
| आग्रह | – | क्रोध (आग्रहमु के अर्थ में) |
| विधि | – | किस्मत (भाग्य के अर्थ में) |
| अभिमान | – | प्रेम, आदर (अभिमानमु के अर्थ में) |
| **हिंदी** | – | **अंग्रेजी** |
| सफेद झूठ | – | White lie |
| रजत जयंती | – | Silver jublie |
| पाद टिप्पणी | – | Foot note |
| रेखांकित चेक | – | Crossed cheque |
| श्वेत पत्र | – | White paper |

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में हम अंग्रेजी के प्रभाव को अनुवाद अथवा समुचित पर्यायों हेतु बनाई गई पारिभाषिक शब्दावली में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। हालाँकि यदि भारतीय भाषाओं के अंदर झाँका जाए तो हमें इनके स्थानीय पर्याय भी मिल जाते हैं। 'सफेद झूठ' के लिए 'निरा/कोरा असत्य' भी कहा जा सकता है परंतु व्यवहार की दृष्टि से अंग्रेजी के प्रभाव वाले शब्द गढ़ लिए गए और अब प्रयोग में आ रहे हैं।

**iv) साहित्येतर अनुवाद की दो दिशाएँ और अनुवाद समीक्षा :** साहित्येतर अनुवाद की दो धाराएँ हमारे सम्मुख हैं। एक ओर सरकारी स्तर पर किए गए कार्यालयी, बैकिंग, विधि आदि का अनुवाद, दूसरी ओर गैर–सरकारी संगठनों से संबंधित हैं। अखबार, पत्रिकाएँ, टी.वी., उद्योग, व्यवसाय जैसे अनेक क्षेत्र भाषायी विविधता का सृजनात्मक प्रयोग करते हुए भाषा विकास का कार्य कर रहे हैं। पारिभाषिक शब्दावली आयोग, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नेशनल बुक ट्रस्ट, साहित्य अकादमी, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा आयोग आदि सरकारी संस्थाएँ तथा बंगाल की वैज्ञानिक शब्दावली समिति, गुजरात विद्यापीठ, डॉ. रघुवीर, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हिंदी साहित्य सम्मेलन, हिंदुस्तानी प्रचार सभा आदि गैर–सरकारी संस्थाएँ विभिन्न कोश और पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण कर चुकी हैं। आधुनिक सूचना क्रांति और वैश्वीकरण के स्तर पर अधिकतर क्षेत्र जनसंपर्क के क्षेत्र हैं। इसलिए इन की भाषा में तकनीकी और गैर–तकनीकी भाषिक तत्वों का सही

अनुपात में मिश्रण और संतुलन दिखाई देता है। प्रयोजनमूलक भाषा की तथ्यपरकता और सामान्य भाषा की सृजनात्मकता दोनों का इस्तेमाल हो रहा है। अनुवाद समीक्षा द्वारा दोनों की तुलना करके संशोधित किया जा सकता है। उदाहरणार्थ :

- Matter is under consideration = विषय विचाराधीन है।
- Please circulate and file = सभी को दिखाकर फाइल कर दीजिए।
- Returned in orignal with the remarks that the requisite information has already been sent by this office letter no…….. dated…….. मूल रूप में ही इस टिप्पणी के साथ लौटाया जाता है कि अपेक्षित सूचना पहले ही इस कार्यालय के पत्र सं.....दिनांक ..... द्वारा भेजी जा चुकी है।

**v) साहित्येतर अनुवाद समीक्षा (पाठपरक) :** अनुवाद के संदर्भ में पाठपरक शब्द को देखते ही हमें साहित्यिक अनुवाद याद आता है, किंतु समीक्षा जितनी साहित्यिक अनुवाद में उपयोगी है, उससे कहीं ज्यादा साहित्येतर क्षेत्र के अनुवाद में पाठपरक अनुवाद में लाभकारी है। पाठपरक अनुवाद को देखने की दृष्टि कई दिशाएँ प्रदान करती है। इसका प्रयोग करते हुए यह देखा जाता है कि अपने संदेश, बुनावट में अनूदित पाठ, मूल पाठ के कितने निकट या उससे कितनी दूरी पर है। मूल पाठ को अनूदित पाठ का कितनी सीमा तक संप्रेषित कर पाना सफल हो पाया है। अनूदित पाठ मूल पाठ से कितनी दूरी पर है? इसे निम्नलिखित उदाहरणों में देख सकते हैं :

1) **मूल** : He was responsible to reclaim the land.
**अनर्थ** : वह भूमि का पुनर्दावा करने के लिए जिम्मेदार था।
**प्रस्तावित** : उस पर भूमि को ठीक करने का उत्तरदायित्व था।

2) **मूल** : The Court was seized of the matter.
**अनर्थ** : न्यायालय ने उस मामले को ग्रहण कर लिया।
**प्रस्तावित** : यह मामला न्यायालय के विचाराधीन था।

3) **मूल** : Town and Country Planning Director.
**अनर्थ** : नगर और देश योजना निदेशक।
**प्रस्तावित** : नगर और ग्राम योजना निदेशक।

उपर्युक्त उदाहरणों में हम अनूदित पाठ और स्रोत पाठ के मध्य 'कथ्य' के संप्रेषण की दूरी और नजदीकी को प्रत्यक्षता देख सकते हैं।

**vi) साहित्येतर अनुवाद समीक्षा (प्रक्रियापरक) :** अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक की भूमिका बहुआयामी होती है। यह पाठक की, भाषा विश्लेषक की, विषय–विशेषज्ञ की और द्विभाषी की भी हो सकती है। अनुवादक की ये सारी क्षमताएँ, दक्षताएँ और अक्षमताएँ अनुवाद की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। इसीलिए अनुवाद को भाषा व्यापार की सृजनात्मक प्रक्रिया माना गया परंतु सृजनात्मकता साहित्यिक पाठों तक सीमित है। साहित्येतर पाठों के लिए नहीं; यह धारणा और भ्रम लोगों में प्रचलित हो गया है। इसके अनुसार साहित्येतर पाठों के जो हिंदी अनुवाद मिलते हैं, उनमें सृजनात्मकता का अभाव दिखाई देता है। उदाहरण के लिए, 'Will you take meals?', क्या आप खाना

खाएँगे? / आप खाना खाएँगे क्या? / क्या तुम खाना खाओगे? अनुवाद समीक्षा में इस पक्ष को उभारते हुए हम कई प्रश्नों के उत्तर सहजता से पा सकते है। अगर मूल पाठ से अनुवाद भिन्न है तो क्यों? दोनों पाठों की प्रकृति में जो भेद है, उनके कारण क्या है? संदेश, भाषा की संरचना, शैली और प्रोक्ति की संरचना क्या है? साहित्येतर पाठों में जो भी जटिलता या क्लिष्टता को लेकर चर्चा करते हैं, उसका कारण पारिभाषिक शब्द हैं। पारिभाषिक शब्द निर्माण की नई युक्तियाँ अपनाई गईं और नई भाषा शैली गठित की गई। उदाहरण के रूप में विधि एवं कानून की भाषा को लिया जा सकता है :

| | | |
|---|---|---|
| अभियोग | – | Charge |
| अधिदेश | – | Mandate |
| धारा | – | Section |
| खंड | – | Clause |
| समादेश | – | Writ |
| अध्यादेश | – | Ordinance |
| निदेश | – | Direction |
| निर्देश | – | Reference |
| प्रतिवाद / प्रतिरक्षा / रक्षा | – | Defence |

इसका स्वरूप अत्यंत तकनीकी होने के कारण प्रयोग में जटिल एवं दुरूह प्रतीत होता है।

हिंदी में शब्द निर्माण की प्रक्रिया भी अपनाई गई है। यह निर्माण सहज और नियोजित रूप में होता है। जैसे, 'काला धन' (Black money), 'काला बाजार' (Black Market), 'काला धंधा' (Black deals) आदि। यहाँ 'काला' शब्द में 'कालुष्य' का भाव जुड़ा है। तत्व (Elements) यौगिक (Compunds) नियोजित रूप में निर्मित किए गए हैं। इसलिए इनके अनुवाद में नियोजन के घटकों को जानना आवश्यक है।

अनुवाद समीक्षा में इन सभी पक्षों की ओर दृष्टि आकृष्ट की जाती है। इसलिए पारिभाषिक शब्दावली के प्रकारों पर विभिन्न विद्वानों ने चर्चा की। प्रयोग और संदर्भ के आधार पर पूर्ण और अर्ध–पारिभाषिक शब्दावली पर विचार करते हैं। अर्थ संप्रेषण पर पारदर्शी और अपारदर्शी पारिभाषिक शब्दों की श्रेणियाँ निर्मित की गई हैं। विधा विशेष के आधार पर भिन्न स्रोतों, परंपरागत और जनबोलियों से लिए गए शब्दों की पारिभाषिकता पर विवेचनात्मक दृष्टि डाली जाती है; जैसे, अणु, परमाणु, स्वनिम, रूपिम, टेंडर, निविदा, लाभांश, धातु, निर्वाचन, पावती आदि।

हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली एक ही प्रकार की नहीं है, क्योंकि एक ही अर्थ को अभिव्यक्त करने के लिए यहाँ तत्सम, तद्भव और आगत शब्द का स्वतंत्र प्रयोग और आवश्यकता के अनुसार संकरित प्रयोग भी हमें मिलता है। शब्दों के बहुस्तरीय रूप अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन के लिए आधार बन सकते हैं।

| | |
|---|---|
| साक्षरता | लिट्रॅसी |
| निर्वात | वैक्यूम |

| | | |
|---|---|---|
| प्रभार | | चार्ज |
| सक्षम | | कंपीटेंट |
| सशर्त | | कंडीशनल |
| घुसपैठ / दलबदलू | | इंट्रुडर |
| Acceptance | | सहमति |
| Sanction | | स्वीकृति |
| Approval | | अनुमोदन |
| किरण | – | आशा की / प्रकाश की उम्मीद |
| गधा | – | मूर्ख / जानवर |
| Tour | – | दौरा / पर्यटन |
| Confidential | – | क्षमता / धारिता / गोपनीय |

इन सभी प्रयोगों में पारिभाषिक शब्दावली में अनेक स्तर तथा प्रक्रियात्मक चरण स्पष्ट दिखाई देते हैं। अतः अनूदित पाठ की समीक्षा में इन्हें आधार बनाकर 'नए पाठ' को संप्रेषणीयता की दृष्टि से क्षमता की कसौटी पर परखा जा सकता है।

### vii) संप्रेषण और अनुवाद समीक्षा

अनुवाद संप्रेषण (लक्ष्य) की द्विभाषिक क्रिया है, जिसका लक्ष्य है – भाषा 1 में कही गई बात को भाषा 2 के माध्यम से सहज संप्रेषणीय अभिव्यक्ति में रूपांतरित करना। आधुनिक अनुवाद चिंतन संदेश, संदेश के संप्रेषण और संदेश जिनके लिए है, प्रयोक्ता (उपयोक्ता) इन तीनों को सर्वाधिक महत्व देता है। अनुवाद समीक्षा में अनूदित पाठ की संप्रेषणीयता पर आधारित इस दृष्टि को भी उजागर करने की आवश्यकता है। इसके आधार पर ही अनूदित पाठ की संप्रेषणीयता के अनुपात की जाँच की जा सकती है। यहाँ बाजार समाचार की अभिव्यक्तियों को उदाहरण के रूप में देख सकते हैं।

- बाजार गिरना : मूल्यों में कमी
- बाजार में खामोशी रहना : जब कम सौदे हों
- बाजार में चहल–पहल रहना : अधिक मात्रा में सौदे होना
- बाजार संभलना : जब मूल्य ह्रास के बाद क्रमशः वृद्धि होने लगे
- बाजार टूटना : मंदी आना
- बाजार में तेजी से उछाल : मूल्यों में अनपेक्षित वृद्धि

## 20.9 अनुवाद के पुनरीक्षण, मूल्यांकन और समीक्षा में अंतर

अनुवाद के पुनरीक्षण, अनुवाद समीक्षा और अनुवाद मूल्यांकन का संबंध सफल अनुवाद के जाँच और परीक्षण से है। किंतु अनुवाद पुनरीक्षण तथा अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन में अंतर यह है कि अनुवाद पुनरीक्षण अनुवाद प्रक्रिया का एक सोपान है। यह सोपान अंतिम है। इस सोपान में अनूदित पाठ की जाँच की जाती है और उसमें सुधार किया जाता है। इसमें लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुसार संशोधन और परिमार्जन किया जाता है, किंतु अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन अनुवाद प्रक्रिया के पूर्ण होने के बाद का विवेचन

है। अनुवाद मूल्यांकन और समीक्षा का कार्य अनूदित पाठ के स्वायत्त पाठ बन जाने के बाद प्रारंभ होता है। पुनरीक्षण में पुनरीक्षक के लिए अनुवादक होना अनिवार्य है, जबकि अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन में समीक्षक का अनुवादक होना अनिवार्य नहीं है। अनुवाद मूल्यांकन में अनूदित पाठ की मूल पाठ के संदर्भ में जाँच करके उसकी गुणवत्ता के बारे में निर्णय दिया जाता है।

भारतीय भाषाओं में विशेषकर हिंदी में समीक्षा का संबंध एक ओर आलोचनात्मक अध्ययन से है तो दूसरी ओर कृति के गुणावगुण विवेचन से भी है। समीक्षा में विश्लेषण के साथ–साथ मूल्यांकन भी होता है। परंपरागत समीक्षा के अंतर्गत समसामयिक कृतियों की मूल्यांकनपरक आलोचना पर साहित्यिक और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण किया जाता है। अनुवाद को मूल को समकक्ष पाठ के रूप में रखा जा सकता है अथवा नहीं, यह बताया जाता है।

अनुवाद समीक्षा में अनुवाद का मूल्यांकन भी निहित होता है। पूर्व–निर्धारित मानदंडों या मूल्यों के आधार पर कृति के गुण–अवगुणों की जाँच जाती है। इससे पाठक वर्ग को एक दिशा मिल जाती है और कृति की स्वीकार्यता–अस्वीकार्यता तथा पठनीयता–अपठनीयता के लिए भी मार्गदर्शन होता है।

वास्तव में समीक्षा का मुख्य उद्देश्य आलोचना को वस्तुनिष्ठ बनाना है, जिसके लिए तर्कपूर्ण और सटीक विश्लेषण की तुलना की अपेक्षा रहती है। इसमें आलोचक अलग से मूल्यांकन नहीं करता क्योंकि विश्लेषण के भीतर ही मूल्यांकन निहित रहता है। वस्तुतः विश्लेषण के अंतर्गत कृति की रूप रचना और व्यवस्था का अन्वेषण होता है जिसमें मूल्यांकन का साक्ष्य होना आवश्यक है। इस प्रकार समीक्षा कहीं न कहीं मूल्यपरक निर्णय देती है। एक बात अवश्य है कि समीक्षा पूर्व–निर्धारित मूल्यों के बिना संभव नहीं है। अतः मूल्यांकन में निश्चित आधारों की सहायता से कृति का विवेचन किया जाता है और यह देखने का प्रयास रहता है कि उन आधारों का निर्वाह सफलतापूर्वक हुआ है या नहीं। मूल्यांकन करते समय विश्लेषण के परिणामों को साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। समीक्षा में विश्लेषण मुख्य रूप से रहता है और मूल्यांकन उसके बाद आता है। किंतु मूल्यांकन में निर्धारित मूल्यों से ही कृति का गुणावगुण निरूपण या गुण–दोष विवेचन संभव हो पाता है। उन्हीं के संदर्भ में अनुवाद मूल्यांकन और अनुवाद समीक्षा की जाती है। इस प्रकार अनुवाद समीक्षा और अनुवाद मूल्यांकन अन्योन्याश्रित प्रक्रियाएँ हैं। मूल्यांकन के विकसित आधारों पर समीक्षा अधिक प्रभावकारी होगी और सम्यक् रूप से की गई समीक्षा से मूल्यांकन को सही दिशा प्राप्त होगी।

मूल साहित्यिक कृति और उसके अनुवाद की समीक्षा और मूल्यांकन में अंतर केवल यह है कि साहित्यिक कृति को स्वायत्त और स्वनिष्ठ मानकर अध्ययन किया जाता है किंतु अनूदित पाठ की समीक्षा और मूल्यांकन मूल पाठ को देखे बिना कठिन होगा।

**अभ्यास 1**

निम्नलिखित मूल और अनुदित पाठ को पढ़िए और अनुवाद की समीक्षा कीजिए :

**मूल पाठ :** We believe in democracy. Speaking for myself, I believe in first of all, because I think it is the right means to achieve ends because it removes the pressure which other forms of government may impose on the

individual. It transforms the discipline which is imposed by authority largely of self discipline. Self discipline means that even people who do not agree the minority-accept solutions because it is better to accept them than to have conflict. It is better to accept them and then change if necessary, by peaceful methods. Therefore, democracy means to me an attempt at the solutions of problems by peaceful methods. If it is not peaceful, then to my mind, it is not democracy. If I may further elaborate the second reason, democracy gives the individual an opportunity to develop. Such opportunity does not mean anarchy, where every individual does what he likes. A social organization must have some disciplines to hold it together. Those can either be imposed from outside or be in the nature of self-discipline. Imposition from outside may take the form of one country governing another or of an autocratic or authoritarian form. In a proper democracy, discipline is self-imposed. There is no democracy if there is no discipline.

(Jawaharlal Nehru's Address to the first All India Seminar on Parliamentary Democracy, New Delhi, 25 February, 1956)

**अनूदित पाठ :** हम लोकतंत्र में विश्वास करते हैं। जहाँ तक मेरा सवाल है मैं इसमें विश्वास करता हूँ क्योंकि पहली बात यह है कि लक्ष्य–प्राप्ति का यह सही तरीका है और यह एक शांतिपूर्ण उपाय है। दूसरी बात यह है कि व्यक्ति पर दूसरी प्रकार की सरकारें जो दबाव डाल सकती हैं, उन दबावों को लोकतंत्र दूर करता है। सत्ता जो अनुशासन लोगों पर लादती है अधिकांश रूप में लोकतंत्र उसे आत्म–अनुशासन में बदल देता है। आत्म–अनुशासन का अर्थ यह है/कि वे लोग भी जो सहमत नहीं होते यानी अल्पसंख्यक भी समाधानों को स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि संघर्ष की अपेक्षा स्वीकार करना बेहतर है। उन्हें मनाना बेहतर है और बाद में आवश्यक समझे जाने पर, उन्हें शांतिपूर्ण तरीकों से बदल देते हैं। अतएव, मेरे लिए लोकतंत्र का अर्थ है – शांतिपूर्ण उपायों से समाधान खोजने का प्रयत्न। अगर उपाय शांतिपूर्ण न हों, तो मेरी समझ में वह लोकतंत्र नहीं है। अगर मैं दूसरे कारण की और व्याख्या करूँ तो कहा जाएगा कि लोकतंत्र से व्यक्ति को विकास का अवसर प्राप्त होता है इस तरह के अवसर को अराजकता नहीं कह सकते जहाँ कोई भी व्यक्ति जो चाहे वह करे। किसी भी सामाजिक संगठन में ऐसे अनुशासन होने चाहिए जो संगठन को एकजुट रख सकें। ये अनुशासन या तो बाहर से लादे जा सकते हैं या आत्म–अनुशासन अपनाकर रखे जा सकते हैं। अगर अनुशासन बाहर से लादा जाए तो ऐसा लग सकता है मानों एक देश दूसरे पर शासन कर रहा है या फिर स्वेच्छाचारी या तानाशाही सरकार है। अच्छे लोकतंत्र में अनुशासन स्वयं अपनाया जाता है। अगर अनुशासन न हो तो लोकतंत्र नहीं रहता है।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

**अभ्यास 2**

निम्नलिखित मूल पाठ और अनुवाद को पढ़िए और अनुवाद की समीक्षा कीजिए :

**मूल** : रो रो कर सिसक सिसक
कहता मैं करुण कहानी
तुम सुमन नोचते सुनते
करते जानी अनजानी

**अनुवाद** : With sighs and sobs and cries,
I tell my tale of woe;
You listen plucking buds,
Pretending you don't know.

.....

.....

.....

.....

.....

**अभ्यास 3**

निम्नलिखित मूल पाठ और अनुवाद को पढ़िए और अनुवाद की समीक्षा कीजिए :

**मूल** : झंझा झकोर गर्जन थी
बिजली थी नीरद माला
पकर इस शून्य हृदय को
सबने आ डेरा डाला

**अनुवाद** : The roaring thunder-storm
And clouds with lightning girt,
All pitched their tents within
This untenanted heart

.....

.....

.....

.....

.....

## 20.10 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा है कि अनूदित पाठ में अनुवाद की सफलता–असफलता की जाँच–पड़ताल करने के लिए अनुवाद मूल्यांकन की विभिन्न पद्धतियों को अपनाया जाता है, जिनमें पुनरनुवाद आधारित मूल्यांकन, अनुक्रिया आधारित मूल्यांकन, क्लोज परीक्षण, वाचन–परीक्षण आदि पद्धतियाँ मुख्य हैं। इसके अतिरिक्त मूलनिष्ठता के साथ–साथ बोधगम्यता, संप्रेषणीयता, पठनीयता और प्रयोजन सिद्धि भी अनूदित पाठ को प्रभावोत्पादक बनाते हैं। ये अनुवाद मूल्यांकन के आवश्यक पक्ष हैं अनुवाद समीक्षा में अनूदित पाठ के गुण–दोषों का विवेचन किया जाता है।

अनुवाद समीक्षा पाठ को एक स्वायत्त पाठ के रूप में देखती है। अतः अनुवाद समीक्षक का अनुवादक होना अनिवार्य नहीं है। अनुवाद समीक्षा में अनूदित पाठ का विश्लेषण और मूल्यांकन दोनों होते हैं। मूल पाठ और अनूदित पाठ की तुलना करते हुए अनूदित पाठ का जो मूल्यांकन किया जाता है वह विभिन्न आलोचनात्मक मूल्यों के संदर्भ में किया जाता है। इसमें मूल्यांकन की विभिन्न पद्धतियों को अपनाया जाता है। इस प्रकार अनुवाद समीक्षा और अनुवाद मूल्यांकन एक–दूसरे पर आश्रित प्रक्रियाएँ हैं। अनुवाद समीक्षा अनुवाद मूल्यांकन के बिना प्रभावशाली नहीं होती।

## 20.11 अभ्यास के लिए प्रश्न

1) अनुवाद का मूल्यांकन क्या होता है? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

2) अनुवाद मूल्यांकन के लिए अंग्रेजी में कौन से शब्द प्रचलित हैं? चर्चा कीजिए।

3) अनुवाद मूल्यांकन की पद्धतियाँ कौन–सी हैं? अच्छे अनुवाद के चार गुण बताइए।

4) अनुवाद समीक्षा के स्वरूप और प्रकृति पर पाँच लिखिए।

5) अनुवाद के पुनरीक्षण, मूल्यांकन और समीक्षा में क्या अंतर है?

## 20.12 उपयोगी पुस्तकें


- सुरेश कुमार, 2007, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा (सातवाँ संस्करण), दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2008, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, पूरनचंद टंडन (सं.), अनुवाद मूल्यांकन, नई दिल्ली, भारतीय अनुवाद परिषद।
- कुसुम अग्रवाल, 1999, अनुवाद शिल्प : समकालीन संदर्भ, साहित्य सहकार, दिल्ली।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, अन्नपूर्णा, ओ.प्र. प्रजापति, 2014, अनुवाद की नई परंपरा और आयाम, नई दिल्ली, प्रकाशन संस्थान।

- कैलाशचंद्र भाटिया, अनुवाद कला : सिद्धांत प्रयोग, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन।
- रवींद्रनाथ श्रीवास्तव एवं कृष्ण कुमार गोस्वामी (सं.), अनुवाद : सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- दिलीप सिंह, साहित्येतर पाठ का संदर्भ, अनुवाद समीक्षा और मूल्यांकन।
- House, Juliana, 1977, Mudel for Translation Quality Assessment, Verlag, TBC.
- Nida, E.A & C Taber, 1975, The Theory and Practice of Translation Leiden, EJ. Brill.


ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY